कुष्ठ उन्मूलन की राह में

मनीष वैद्य

कुष्ठ रोग के सम्बंध में प्राय: हर समाज में कई तरह के भ्रम, भय, निराधार धारणाएं व मान्यताएं फैली हुई हैं। इनके चलते कुष्ठ रोग मात्र चिकित्सकीय समस्या न होकर सामाजिक व मनोवैज्ञानिक समस्या बना हुआ है।

भारत के 30 राज्यों व 7 केन्द्र शासित प्रदेशों में 455 ज़िले हैं। इनमें से 201 ज़िलों में कुष्ठ का प्रभाव काफी ज़्यादा है; इन ज़िलों में प्रति 1000 जनसंख्या पर 5 व्यक्ति कुष्ठ-प्रभावित हैं। 1981 की जनगणना के अनुसार उस वक्त भारत में लगभग 40 लाख कुष्ठ प्रभावित व्यक्ति थे, लेकिन सरकारी सर्वे के आधार पर माना जा रहा है कि 1994 के अन्त तक यह संख्या 10 लाख रह गई थी।

दरअसल इस रोग का एकमात्र कारण है शरीर में कुष्ठ के रोगाणुओं से लड़ने की क्षमता न होना। यदि यह बात जन-जन तक पहुंचाई जा सके तो इस रोग के बारे में फैले भ्रम तोड़े जा सकते हैं, निराधार धारणाएं व खोटी मान्यताएं बदली जा सकती हैं। इससे इस रोग को लेकर फैला अकारण भय मिटाया जा सकता है। जहां तक कुष्ठ रोगी के ठीक होने का प्रश्न है, वह तो नियमित उपचार से ठीक हो ही जाता है।

कुष्ठ की कारगर औषधि डेपसोन की खोज के बाद सन् 1954-55 में भारत ने कुष्ठ नियंत्रण के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम शुरू किया था। लेकिन इस उपचार में 5 से 10 वर्ष या इससे भी अधिक समय लग जाता था। अनियमित औषधि सेवन के कारण अनेक मामलों में यह अकेली दवा कारगर नहीं पाई गई व कुछ रोगियों में औषधि प्रतिरोध भी उत्पन्न हो गया था। सन् 1978 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने बहुऔषधि उपचार को कुष्ठ रोग उपचार हेतु काफी प्रभावशाली पाया। भारत सरकार ने 1982-83 में राष्ट्रीय कुष्ठ नियंत्रण कार्यक्रम हेतु इसे अपनाया।

कुष्ठ रोग क्या है?

कुष्ठ एक रोग है जो कुष्ठ के रोगाणुओं *लेप्राबेसिलाई* या *माइक्रो बेक्टीरियम लेप्री* से होता है। इनका आकार-प्रकार क्षय रोग (टी.बी) के रोगाणुओं से मिलता-जुलता है। प्रत्येक मानव शरीर में अनेक रोगों से लड़ने की प्राकृतिक क्षमता होती है। कुछ रोगों से लड़ने की शक्ति वह अपने परिवेश से धीरे-धीरे अर्जित भी करता है। कुष्ठ रोग के सम्बंध में तथ्य यह है कि 98 से 99 प्रतिशत व्यक्तियों के शरीर में कुष्ठ के रोगाणुओं से लड़ने की पर्याप्त प्राकृतिक क्षमता होती है। एक से दो प्रतिशत व्यक्ति ही ऐसे होते हैं जिनके शरीर में यह रोग प्रतिरोधक क्षमता बिल्कुल नहीं या बहुत कम होती है। यही वे व्यक्ति हैं जिन्हें कुष्ठ रोग होने की सम्भावना अधिक होती है। यानी किसी व्यक्ति को कुष्ठ रोग होना या न होना उसकी निजी कुष्ठ प्रतिरोधक क्षमता व उसका रोगाणुओं के सम्पर्क में आने पर निर्भर करता है।

इस रोग का एकमात्र कारण है शरीर में कुष्ठ के रोगाणुओं से लड़ने की क्षमता न होना। कुष्ठ रोगी नियमित उपचार से ठीक हो ही जाता है।

कुष्ठ रोगाणु की खोज करने वाले नॉर्वे के डॉ. हेनसन्स ने कुष्ठ प्रभावित व्यक्ति के शरीर पर उभरी गांठों का रस इंजेक्शन द्वारा अपने शरीर में तीन बार प्रविष्ट कराया था। लेकिन उनके शरीर की पर्याप्त रोग प्रतिरोधक क्षमता के कारण उन्हें यह रोग नहीं हुआ। हालांकि कुष्ठ एक संक्रामक रोग है किन्तु वास्तव में बहुत कम रोगी संक्रामक होते हैं। कुष्ठ पीढ़ी

जन्म का दाग | विटामिन की कमी से होने वाला दाग | सोरियासिस | दाद

कुष्ठ रोग के समान दिखते ये चर्म रोग कुष्ठ रोग नहीं हैं।